المعهد الملكي للثقافة الأمازيغية
INSTITUT ROYAL DE LA CULTURE AMAZIGHE

ⴰⵎⵎⴰⵙ ⵏ ⵜⵢⵙⵙⵓⵎⵉⵏ ⵏ ⵜⵙⵏⴰⵜⵓⵏⵜ ⴷ ⵜⵙⵏⴰⵎⵙⵏⵜ

Centre des Etudes Anthropologiques et Sociologiques

ⵜⴰⵙⴰⵏⵓⵙⵜ ⵜⴰⵎⵣⴰⵢⵜ ورش تفاعلي

Atelier Interactif

ⴰⴷ ⵏⵙⵎⵙ ⵜⴰⵎⴰⵏⵓⵏⵜ ⵜⴰⴷⵏⵓⵙⵜ

استيعاب التنوع الثقافي

Comprendre la Diversité Culturelle

Le mercredi 24 mai 2017 à 15H00
Siège de l'IRCAM-Rabat

ⵙ ⵜⵎⵏⴷⴰ ⵏ ⵓⵙⵙⵓ ⴰⵎⴰⵏⵏⴰⵏ ⵏ ⵜⵎⴰⵏⵓⵏⵜ ⵜⴰⴷⵏⵓⵙⵜ ⵅⵅ ⵙⵎⵙⴰⵓⵏ ⴷ ⵜⵅⵎⵉ

© Tifinaghe - IRCAM

ⵉⵙⵕⵕⵉⵏ ⵏⵜⵅⵉⵏⴰⵢ[1]

Alphabet tifinaghe — أبجدية تيفيناغ

	TIFINAGHE	Correspondance latine	Correspondance arabe	Exemples
ya	ⴰ	a	ا	ⴰⴷⴰⴰ
yab	ⴱ	b	ب	ⴰⴱⴰⵉⴷ
yag	ⴳ	g	گ	ⵜⵉⴳⵎⵎⵉ
yag^{w}	ⴳⵓ	g^{w}	گ،	ⴰⵣⴳⴳⵓⴰⵢ
yad	ⴷ	d	د	ⴰⵅⵙⴷ
yaḍ	ⴹ	ḍ	ض	ⴰⴹⴰⵇ
yey	ⵄ	e		ⴰⵅⵇⴹⵄⴹⵄ
yaf	ⵉⴼ	f	ف	ⴰⵅⵙⴼ
yak	ⴽ	k	ك	ⵜⵉⴽⴰⵜ
yak^{w}	ⴽⵓ	k^{w}	‘ك	ⴰⵎⴷⴷⴰⴽⴽⵓⵏ
yah	ⵀ	h	ه	ⴰⵀⴷⴷⵙⵍ
yaḥ	ⵃ	ḥ	ح	ⴰⵃⵍⴰⵄ
yaε	ⵄ	ε	ع	ⴰⵄⴱⴰⵍ
yax	ⵅ	x	خ	ⵜⵉⵅⴰⵉ
yaq	ⵇ	q	ق	ⴰⵇⴰⴰⴱ
yi	ⵉ	i	ي	ⵉⵎⵉ
yaj	ⵊ	j	ج	ⴰⵢⵍⵊⴰ
yal	ⵍ	l	ل	ⴰⵎⵍⴰⵍ
yam	ⵎ	m	م	ⴰⵎⴰⵍ
yan	ⵏ	n	ن	ⵉⴰⴷⵍ
yu	ⵓ	u	و	ⵙⴷⵎ
yar	ⵔ	r	ر	ⵙⴰⴰⴰ
yaṛ	ⵕ	ṛ	ڕ	ⴱⵕⵕⴰ
yaγ	ⵖ	γ	غ	ⴰⵖⴰⵙⵎ
yas	ⵙ	s	س	ⵉⵍⵙ
yaṣ	ⵚ	ṣ	ص	ⵜⴰⵎⵚⵕⵉⵚⵜ
yac	ⵛ	c	ش	ⴰⵛⵍⵍⴰⵍ
yat	ⵜ	t	ت	ⵜⴰⵅⵙⴰⴰⵜ
yaṭ	ⵟ	ṭ	ط	ⵜⵉⵟⵟ
yaw	ⵡ	w	‘و	ⴰⵡⴰⵍ
yay	ⵢ	y	‘ي	ⵜⴰⵢⴰⴰ
yaz	ⵣ	z	ز	ⴰⵎⴰⵣⵉⵖ
yaẓ	ⵥ	ẓ	ژ	ⴰⵥⴰⵍⵉⵎ

1 Tableau officiel de l'alphabet tifinaghe tel qu'il est préconisé par le Centre de l'Aménagement Linguistique (CAL) et consacré par l'IRCAM.

ⴰⵙⴰⵜⵉ ⵏ ⵜⵙⴰⵡⵔⵜ

ⵜⴳⴰ ⵜⵎⴰⵏⴰⵡⵜ ⵜⴰⴷⵍⵙⴰⵏⵜ ⵢⴰⵏ ⴳ ⵉⵙⵏⵜⴰⵍ ⵏⵏⴰ ⵢⵓⵎⵥⵏ ⴰⴷⵖⴰⵔ ⵎⵇⵇⵓⵔⵏ ⴳ ⵉⵙⴰⵢⵔⴰⵙⵏ ⵉⵏⵖⵎⴰⵙⵏ ⴷ ⵉⴳⵔⴰⵏ ⵏ ⵓⵎⵙⴳⴷⴰⵍ ⴰⴳⴷⵓⴷⴰⵏ. ⵉⴳ ⵜⴳⴰ ⵜⵎⴰⵏⴰⵡⵜ ⵢⴰⵏ ⵓⵣⵡⵍ ⴱⴹⴰⵏ ⵡⴰⵎⵓⵏⵏ ⵉⵏⴼⴳⴰⵏⵏ ⵙ ⵜⵉⵎⵎⴰⴷ ⵏⵏⵙⵏ, ⴰⵔ ⵉⵜⵜⵏⵏⵣⴰⵔⴰⵢ ⵓⵎⵓⵜⵜⵉ ⵏⵏⵙ ⵙ ⵓⵎⵓⴽⵔⵉⵙ ⴰⵙⵔⵜⴰⵏ ⵏⵖ ⵙ ⵓⵙⵏⵜⵍ ⵏ ⵜⵓⴽⵣⴰ ⵜⴰⵎⴰⴷⴷⵓⴷⵜ ⵎⴽ ⵍⵍⵉ ⵏⵏⵣⴰⵔⴰⵢⵏⵜ ⵜⴽⵍⵉⵡⵉⵏ ⵏ ⵜⵓⵚⴽⴰ ⵏ ⵉⵡⵓⵏⴰⴽ ⵉⵏⴰⵎⵓⵔⵏ ⴷ ⵜⵖⴰⵔⴰ ⵏ ⵜⵓⴷⴷⵙⴰ ⵏⵏⵙⵏ ⵜⴰⵙⵔⵜⴰⵏⵜ ⴷ ⵜⵏⴰⵎⵓⵏⵜ. ⵉⵎⵓⵜⵜⵍ ⴽⵓ ⴰⵡⴰⵍ ⴳⴼ ⵜⵎⴰⵏⴰⵡⵜ ⵜⴰⴷⵍⵙⴰⵏⵜ ⵣⵓⵏ ⴷ ⴰⴽⴽⵯ ⵜⵉⵖⴰⵡⵙⵉⵡⵉⵏ ⵉⵣⴷⵉⵏ ⴷ ⵜⵓⵙⵙⵏⴰ ⴰⵛⴽⵓ ⵓⵔ ⵣⴳⵉⵏⵜ ⵜⴳⵓⵔⵉⵡⵉⵏ ⴷ ⵉⵔⵎⵎⵓⵙⵏ ⵏⵏⴰ ⵖⵉⴼⵔⵙⵏ ⵉⵍⵍⴰⵏ. ⵎⴽ ⴰⵏ ⴰⴼ ⵜⵜⵓⵣⵍⴰⵢⵏⵜ ⵜⴽⵍⵉⵡⵉⵏ ⵏ ⵓⵙⴰⴷⴼ ⵏ ⵓⵙⵎⵉⵍ ⴰ, ⵣⵓⵏ ⴷ ⵏⵉⵜ ⵉⵣⵔⴼⴰⵏ ⵉⴷⵍⵙⴰⵏⵏ ⵏⵏⴰ ⴳⴼ ⵉⴱⴷⴷ ⵉⵍⵉ ⵏⵏⵙ ⵉⵖⵣⴰⵏ, ⴳ ⵓⵎⴳⵔⴰⵡ ⴰⴳⵔⴰⵖⵍⴰⵏ ⵏ ⵉⵣⵔⴼⴰⵏ ⵏ ⵓⴼⴳⴰⵏ ⴷ ⵉⵎⴰⵙⵙⵏ ⵉⵎⵔⵙⵍⴰⵏⵏ ⵙ ⵜⵓⴳⴳⵜ ⵏ ⵓⴳⵍⴰⴳⴰⵍ ⴷ ⵓⵃⴰⵔⴱ ⴷ ⵓⵙⵓⴳⴳⵎ. ⵎⵇⵇⴰⵔ ⴷ ⵜⵉⵡⵉ ⵜⴳⵔⵓⵉ ⵜⴰⵎⴰⴹⵍⴰⵏⵜ ⵏ ⵉⵣⵔⴼⴰⵏ ⵏ ⵓⴼⴳⴰⵏ ⵎⴰⵙ ⵉⵍⴰ ⴽⵓ ⵢⴰⵏ ⴰⵣⵔⴼ ⴳ ⵜⵏⴼⵔⵓⵜ ⵜⴰⵏⴰⵎⵓⵏⵜ ⵉⴱⴷⴷⵏ ⴳⴼ ⵓⵙⵢⴰⴼ ⵏ ⵉⵣⵔⴼⴰⵏ ⵏⵏⵙ ⵉⴷⴰⵎⵙⴰⵏⵏ ⴷ ⵉⵏⴰⵎⵓⵏⵏ ⴷ ⵉⴷⵍⵙⴰⵏⵏ, ⵎⴰⵛ ⵉⵕⵥⵎ ⴱⴷⴷⴰ ⵓⵏⴰⵎⴽ ⵏ ⵉⵣⵔⴼⴰⵏ ⵉⴷⵍⵙⴰⵏⵏ, ⵏⵏⴰ ⵢⵓⵎⴰⵏ ⵉⵣⵔⴼⴰⵏ ⵉⵙⵏⵉⵍⵙⵏ, ⴼ ⵜⵓⴳⴳⵜ ⵏ ⵉⵙⵇⵙⵉⵜⵏ ⵉⵎⵓⵜⵜⵍⵏ. ⵉⵙⵎⴷ ⵉ ⵓⵢⴰ ⴰⵏⴰⵡ ⵏ ⵉⵎⵙⴳⴷⴰⵍⵏ ⴷ ⵜⵎⴳⵍⵉⵡⵉⵏ ⵏⵏⴰ ⵎⵉ ⴷ ⵉⵜⵜⵏⵓⵕⵥⵓⵎ ⵡⴰⵡⴰⵍ ⴳⴼ ⴽⵔⴰ ⵏ ⵓⴷⵎⴰⵡⵏ ⵏ ⵉⵣⵔⴼⴰⵏ ⴰⴷ ⵏⵏⴰ ⴳⴼ ⵓⵔ ⵉⵍⵍⵉ ⵓⵎⵙⴰⵙⴰ ⵢⵓⵎⴰⵏ. ⴰⵔ ⵜⴳⴳⴰⵏ ⵢⵉⵣⵔⴼⴰⵏ ⵉⴷⵍⵙⴰⵏ ⴰⵙⵏⵜⵍ ⵏ ⵓⵎⵙⴰⵙⴰ ⵉⴳ ⵉⵙⵏ ⵏⵡⴰⵜⵙ ⵖⴰⵙ ⴰⵣⵔⴼ ⴳ ⵜⵡⵉⵙⵉ ⴳ ⵜⵓⴷⵔⵜ ⵜⴰⴷⵍⵙⴰⵏⵜ, ⵎⴰⵛ ⵉⴳ ⴳⵉⵙⵏ ⵏⵔⴰ ⴰⴷ ⴰⵎⵓⵏ ⵉⵣⵔⴼⴰⵏ ⵏ ⵜⴷⵍⵙⵉⵡⵉⵏ ⵉⵥⵍⵉⵏ ⵏⵖ ⵜⵉⴷ ⵉⵜⵜⵓⵙⵙⵉⵏⴼⵏ ⵏⵖ ⵉⵣⵔⴼⴰⵏ ⵉⴷⵍⵙⴰⵏⵏ ⵉⵥⵍⵉⵏ ⵉ ⴽⵔⴰ ⵏ ⵜⵎⵜⵜⵉⵏ, ⴰⵔ ⵜⴳⴳⴰⵏ ⴰⵙⵏⵜⵍ ⵏ ⵜⵎⴳⵍⴰ ⵏ ⵡⵉⵍⵍⵉ ⴱⵓⵍ ⵢⵓⵙⵉⵏ ⵙ ⵓⵎⵏⴰⴷ ⴰⵍⵉⴱⵉⵔⴰⵍⵉ ⴰⴽⵍⴰⵙⵉⴽⵉ ⵉ ⵜⴷⵉⵎⵓⵇⵔⴰⵜⵉⵜ ⵉⴱⴷⴷⵏ ⴳⴼ ⵢⴰⵜ ⵜⵥⵕⵉ ⵉⴳⵯⵍⵉⵏ ⴰⵙⵏⵜⴰⵢ ⵏ ⵜⵖⵥⵓⵔⵉ ⵏ ⵉⵣⵔⴼⴰⵏ ⵏ ⵓⴼⴳⴰⵏ ⴳⴼ ⵓⴳⴳⵉⴷ ⴷ ⵜⵔⵓⵡⵙⴰⵏⵜ ⵏ ⵜⴷⵍⵙⵉⵡⵉⵏ ⵜⵉⵎⴰⴷⴷⵓⴷⵉⵏ ⵜⵉⵎⵙⴽⴰⵕⴰⴹⵉⵏ.

ⵉⵎⵏⴰⵡⴰⵢ ⵡⴰⴷⴷⴰⴷ ⴰⵏⵙⵙⵉⵏⴼ ⵏ ⵉⵣⵔⴼⴰⵏ ⴰⴷ ⴷ ⴰⵢⵍⵍⵉ ⴷ ⵉⵜⵜⵍⴰⵍⴰⵏ ⵏ ⵉⴷⵔⵉⵣⵏ ⴳ ⵓⵔⵎⵎⵓⵙ ⵉⵣⴳⴰⵏ ⴳⴼ ⵜⵖⴰⵔⴰ ⵏ ⵜⴷⵍⵙⵉⵡⵉⵏ ⵜⵉⵎⴰⴷⴷⵓⴷⵉⵏ ⴷ ⵢⴰⵜ ⵜⴳⵎⵉ ⵏ ⵉⵙⵓⵜⵓⵔⵏ ⵉⵜⵜⵉⵏⵉⵏ ⵎⴰⵙ ⴷ ⵉⵇⵇⴰⵏ ⴰⴷ ⵉⵜⵜⵓⵏⴼⵍ ⵡⴰⴷⴷⴰⴷ ⴰⴷ ⴷ ⵜⵙⴽⵙⵉ ⵙ ⵡⵓⴷⵎ ⴰⵎⴰⵏⴰⵡ ⵏ ⵡⴰⵎⵓⵏⵏ ⴷ ⵜⵉⵍⴰⵍⵜ ⵏ ⵜⴷⵍⵙⴰ, ⵉⴽⵏⵏⴰ ⵉⵔⴰ ⴰⴷ ⵜ ⵉⴳ ⵡⴰⴷⴷⴰⴷ ⵏⵏⵙ ⴳ ⵜⵙⵔⴰⵙ ⵏ ⵜⵓⴽⵣⴰ ⵜⴰⵎⴰⴷⴷⵓⴷⵜ, ⴳ ⵓⵙⴰⴷⴼ ⵖⵔ ⵉⵣⵔⴼⴰⵏ.

ⵜⵙⵍⵓⵍⴰ ⴷ ⵜⵡⴰⴷⴰ ⵜⴰⵎⵣⵔⴰⵢⵜ ⵏ ⵓⵙⵎⵓⵜⵜⴳ ⵏ ⵜⵓⴳⴳⵜ ⵏ ⵉⵡⵓⵏⴰⴽ ⵉⵏⴰⵎⵓⵔⵏ ⵢⴰⵏ ⵓⵙⵓⵔⵙ ⵏ ⵜⵎⵢⴰⵣⴷⴰⵖⵜ ⵏ ⵡⴰⵎⵓⵏⵏ ⵉⵎⴰⴳⵓⵜⵏ ⴳ ⵜⴷⵍⵙⵉⵡⵉⵏ ⴷ ⵜⵓⵜⵍⴰⵢⵉⵏ. ⵉⴳ ⵏⵍⵓⵃ ⴰⵙⵎⴰⵇⵇⵍ ⴳⴼ ⵜⴽⵕⴹⴰ ⵜⴰⵙⵔⵜⴰⵏⵜ ⵜⴰⵎⴰⴹⵍⴰⵏⵜ ⵔⴰⴷ ⵏ ⵏⴰⴼ ⴰⵙⵓⵔⵙ ⴰⴷ ⵉⴼⴰⵡⵏ, ⴰⵛⴽⵓ ⵉⴷⵔⵓⵙ ⵓⵟⵟⵓⵏ ⵏ ⵉⵡⵓⵏⴰⴽ ⵏⵏⴰ ⵙ ⵉⵜⵜⵓⵙⵙⵏ ⴳ ⵓⵎⴳⵔⴰⵡ ⴰⴳⵔⴰⵖⵍⴰⵏ ⴳⴼ ⵡⵓⵟⵟⵓⵏ ⵏ ⵜⵔⵓⴱⴱⴰ ⵜⵉⴷⵍⵙⴰⵏⵉⵏ, ⵜⵉⵜⵏⵉⵢⵉⵏ ⵏⵖ ⵜⵉⵙⵏⵉⵍⵙⵉⵏ ⵏⵏⴰ ⵉⴱⴹⴰⵏ ⵉⴽⴰⵍⵉⵡⵏ ⵏⵏⵙⵏ. ⵉⴷⵔⵓⵙ ⵎⴰ ⴳ ⵏⵏ ⵏⵜⵜⴰⴼⴰ ⴽⵔⴰ ⵏ ⵓⵡⴰⵏⴽ ⵏⵏⴰ ⴳ ⵜⵍⵍⴰ ⴳⵙ ⵢⴰⵜ ⵜⵓⵜⵍⴰⵢⵜ ⵏⵖ ⵢⴰⵜ ⵜⴷⵍⵙⴰ. ⵉⴳⴳⵉ ⵏ ⵜⵎⵢⴰⵣⴷⴰⵖⵜ ⴳⵔ ⵜⵔⵓⴱⴱⴰ ⵎⵓ ⵏⵏⵣⴰⵔⴰⵢⵏ ⵢⵉⵥⵓⵕⴰⵏ ⴷ ⵜⴷⵍⵙⵉⵡⵉⵏ ⴳ ⵓⴳⵏⵙ ⵏ ⵉⵡⵜⵜⴰ ⵏ ⵢⴰⵏ ⵓⵡⴰⵏⴽ, ⵢⵉⵡⵙ ⵓⵙⵡⵓⴷⴷⵓ ⴰⵙⵏⴰⵢⴰⵏ ⵏⵏⴰ ⵉⵣⴰⵣⵡⵓⵍⵏ ⴽⵔⴰ ⵏ ⵜⵙⵔⵜⵉⵢⵉⵏ ⵏ ⵜⵓⵚⴽⴰ ⵜⴰⵏⴰⵎⵓⵔⵜ ⴳ ⵜⵍⴰⵍⵉⵜ ⵏ ⵉⵙⵓⵔⵙⵏ ⵏ ⵜⴰⵙⵙⴰⵙⵜ ⵏⵏⴰ ⵉⵙⵖⴰⵡⵙⴰⵏ ⵙ ⵓⵙⵎⵓⵜⵜⴳ ⵏ ⵜⵎⵔⵓⵔⴰ ⵉⴼⴰⵡⵏ ⵉⵎⵏⴰⴷⵏ ⴰⵙⵏⴰⵔⴰ ⵏ ⵜⵎⴰⵏⴰⵡⵜ ⵜⴰⴷⵍⵙⴰⵏⵜ. ⴰⵔ ⵜⴳⴳⴰ ⵜⵏⴰⴱⴱⴰⵢⵜ ⵏ ⵜⵙⵜⵔⴰⵜⵉⵊⵉⵜ ⵉⵡⴰⵜⵙⵏ ⴰⵎⵢⴰⴷⴰⵙ ⵉⵏⵎⴰⵍⴰⵏ ⵏ ⵉⵎⵓⴽⵔⵉⵙⵏ ⵉⵣⴷⵉⵏ ⴷ ⵓⵙⵓⵔⵙ ⴰ, ⵉⵍⵍⴰⵏ ⵙ ⵜⵖⴰⵔⴰⵙⵜ ⵏ ⵓⵙⵔⵙ ⵏ ⵜⵙⵔⵜⵉⵢⵉⵏ ⵜⵉⴷⵍⵙⴰⵏⵉⵏ ⴷ ⵜⵙⵏⵉⵍⵙⵉⵏ ⵉⴼⴰⵡⵏ ⵉⵜⵜⴰⵡⵙⵏ ⴳ ⵓⴼⵔⴰⴳ ⴷ ⵜⵏⴰⵟⵟⵓⴼⵜ ⵏ ⵉⵡⵏⵏⵉⵜⵏ ⵏⵏⵙ ⵉⵎⵏⵏⴰⵡⵏ, ⴰⵙⵔⴰⴳ ⵉⵏⵜⵜⵉ ⵏ ⵉⵎⵏⵣⴰⵖⵏ ⵉⵏⴰⵎⵓⵏⵏ ⵜⵙⵍⴰⵍ ⴷ ⵉⵎⵓⵙⵙⵓⵜⵏ ⵏ ⵓⵙⵙⵓⵜⵔ ⵉⴳⵯⵏⴰⵏ ⴰⵙⵉⵡⵍ ⵏⵏⵙⵏ ⴳⴼ ⵉⵣⵔⴼⴰⵏ ⵉⴷⵍⵙⴰⵏⵏ, ⴷ ⵜⵡⵉⵙⵉ ⵜⴰⵙⵔⵜⴰⵏⵜ ⵏ ⵜⵎⵓⴷⵔⵓⵙⵉⵏ ⵜⵉⵏⴰⵎⵓⵔⵉⵏ ⵏⵖ ⵜⵉⵏ ⵉⵎⴽⵔⵙⵓⵍⵏ, ⴷ ⵉⵙⵓⵜⵓⵔⵏ ⵉⵙⴳⴰⵡⵏⵏ ⵏⵖ ⵡⵉⴷ ⵉⵣⴷⵉⵏ ⴷ ⵜⵙⵏⵉⵎⴰⵏⵜ ⵏ ⴽⵔⴰ ⵏ ⵜⵔⴰⴱⴱⵓⵜ ⵏⵖ ⵏ ⴽⵔⴰ ⵏ ⵜⵎⵏⴰⴹⵜ.

ⴰⴼⴰⴷ ⴰⴷ ⵉⵜⵜⴰⴼ ⵓⴼⵙⵙⴰⵢ ⵉ ⵣⵓⵏ ⴷ ⵉⵎⵓⴽⵔⵉⵙⵏ ⴰⴷ, ⵜⵜⵓⵙⵔⵔⵙⵏⵜ ⴽⵔⴰ ⵏ ⵜⵎⵔⵓⵔⴰ ⵏⵏⴰ ⵎⵓ ⵏⵏⵣⴰⵔⴰⵢⵏ ⵡⵓⴷⵎⴰⵡⵏ ⴷ ⵜⵕⵡⵉ ⵏⵏⵙⵏⵜ ⵎⴽ ⵍⵍⵉ ⵏⵏⵣⴰⵔⴰⵢⵏ ⵢⵉⵙⴰⵜⴰⵍⵏ ⴷ ⵢⵉⵎⵣⵔⵓⵢⵏ ⵉⵙⵔⵜⴰⵏⵏ ⵏ ⵜⵓⵚⴽⴰ ⵜⴰⵏⴰⵎⵓⵔⵜ. ⵉⵍⵍⴰ ⵎⴰⴷ ⵉⴹⴼⵕⵏ ⵜⴰⵙⵔⵜⵉⵜ ⵏ ⵓⵙⵙⵉⵏⴼ ⴰⵏⴱⵔⵉⴷ ⵏⵖ ⴰⵙⴰⴷⴼ ⵓⵛⵛⵉⵍ ⵏ ⵜⵔⵓⴱⴱⴰ ⵜⵉⴷⵍⵙⴰⵏⵉⵏ ⵏⵖ ⵜⵉⵙⵏⵉⵍⵙⵉⵏ ⴳ ⵜⵎⴳⵔⴰⵡⵜ ⵜⴰⴷⵓⴳⴰⵎⵜ ⵜⴰⵎⴰⴷⴷⵓⴷⵜ, ⵢⵉⵍⵉ ⵎⴰⴷ ⵉⵙⴱⴷⴷⵏ ⴽⵔⴰ ⵏ ⵡⴰⵏⴰⵡⵏ ⵏ ⵜⵓⴽⵣⴰ ⵉⵏⵎⴰⵍⴰⵏ ⴷ ⵜⵖⴰⵔⴰ ⵏ ⵉⵙⵓⵜⵓⵔⵏ ⵏⵖ ⵜⵉⵏ ⵓⵎⴳⵔⴰⵡ ⴰⵙⵔⵜⴰⵏ ⵏ ⵓⵡⴰⵏⴽ. ⵎⵏⵉⴷ ⵏ ⵜⵎⵔⵓⵔⴰ ⵜⵉⵏⴰⵎⵓⵔⵉⵏ ⵉⵥⵍⵉⵏ, ⵜⵍⴽⵎ ⵏ ⵜⵏⴰⵏⴰ ⵏ ⵉⵙⵇⵙⵉⵜⵏ ⴷ ⵉⵎⵓⴽⵔⵉⵙⵏ ⴷ ⵉⵍⵓⵍⵏ ⵖ ⵓⵙⵓⵔⵙ ⴰⴷ ⵉⴼⵉⵜⴰⵍⵏ ⵉⴳⵔⴰⵖⵍⴰⵏ ⴰⵔ ⵉⵜⵜⵙⵓⴳⵓⵔ ⵡⴰⵜⵉⴳ ⵏⵏⵙ ⴳ ⵓⵎⴳⵔⴰⵡ ⴰⵣⵔⴼⴰⵏ ⴰⵛⴽⵓ ⵜⵟⵟⴼ ⵜⵉⵍⴰⵍⵜ ⵜⴰⵙⵜⵔⴰⵜⵉⵊⵉⵜ ⴳ ⵉⴳⵔⴰⵏ ⵏ ⵜⵣⴳⵉ ⵏ ⵓⴼⵔⴰ, ⴷ ⵓⵙⵙⵓⴷⵙ ⵏ ⵓⵎⵢⴰⵡⴰⵙ ⴳⵔ ⵉⵡⵓⵏⴰⴽ ⴷ ⵓⴼⵙⵙⴰⵢ ⵏ ⵉⵎⵏⵣⴰⵖⵏ ⵉⵙⴳⴰⵡⵏⵏ ⴷ ⵓⴼⵔⴰⴳ ⵏ ⵓⵡⵏⵏⴰⴹ. ⴰⵔ ⴷ ⵜⴰⴳⴳⴰⵏⵜ ⵜⴼⵔⴰⵙ ⵏ ⵜⵎⵔⴰⵔⵓⵜ ⴰⴷ ⴳ ⵓⵙⵔⵔⵙ ⵏ ⴽⵔⴰ ⵏ ⵉⵎⴰⵙⵙⵏ ⵉⵣⵔⴼⴰⵏ ⴷ ⵉⵎⵔⵙⵍⴰⵏⵏ ⵉⵎⵣⵡⵓⵔⴰ ⵃⵎⴰ ⴰⴷ ⴳⵏ ⵉⵙⵓⵜⴰⵢ ⵉⵎⵉⵥⵉⵕⵏ ⴷ ⵉⵎⵓⵖⵓⵏⵏ ⵉⵎⵏⴰⴷⵏ ⴰⵙⵎⴽⵍ ⵏ ⵜⵖⴰⵡⵙⵉⵡⵉⵏ ⵉⵣⴷⵉⵏ ⴷ ⵓⵎⵓⴽⵔⵉⵙ ⴰⴷ, ⴷ ⵓⵙⵓⵎⵔ ⵏ ⵜⵖⴰⵔⴰⵙⵉⵏ ⴷ ⵜⵎⴰⵎⴽⵉⵏ ⵢⵓⵙⴰⵏ ⵏ ⵓⵙⵏⴰⵔⴰ ⴰⵎⵏⵍⵍⵉ ⵉⵏⵎⴰⵍⴰⵏ ⵉ ⵜⵎⴰⵏⴰⵡⵜ ⵜⴰⴷⵍⵙⴰⵏⵜ, ⵣⵓⵏ ⴷ ⵜⵉⴳⵏⵉ ⵏ ⵉⵎⵏⵣⴰⵢⵏ ⵉⵙⵡⵓⵜⵜⵓⵏ ⵜⴰⵎⴰⵏⴰⵡⵜ ⴷ ⵓⵙⵙⵓⴼⵖ ⵏ ⴽⵔⴰ ⵉⵣⵔⴼⴰⵏ ⴷ ⵜⴰⵔⴷⴰⵙⵉⵏ ⴳ ⵎⵏⵉⴷ ⴰ.

ⵃⵎⴰ ⴰⴷ ⵏⵔⵎⵙ ⴽⵔⴰ ⵏ ⵉⵎⵉⴽ ⴳ ⵓⵎⵍⴰⵏ ⵏ ⵓⵙⵓⵔⵙ ⴰⴷ, ⵉⵔⴰ ⵡⴰⵎⵎⴰⵙ ⵏ ⵜⵖⵓⵔⵉⵡⵉⵏ ⵏ ⵜⵙⵏⴰⴼⴳⴰⵏⵜ ⴷ ⵜⵙⵏⴰⵎⵓⵏⵜ ⴰⴷ ⵉⵙⵏⵎⴰⵍⴰ ⵢⴰⵜ ⵜⵙⴰⵡⵔⵜ ⵜⴰⵎⵢⴰⵖⵜ, ⴰⵙⵙ ⵏ 24 ⵎⴰⵢⵢⵓ 2017, ⵉⴳ ⵓⵡⵜⵜⴰⵙ ⵏⵏⵙ ⵜⴰⵏⴽⴷⴰ ⵏ ⵓⵙⴰⵜⵉ ⴰⵎⴰⵜⵜⵓ ⵏ ⵡⴰⵔⵔⴰⵎ ⵏ ⵜⵓⴽⵣⴰ ⵙ ⵜⵎⴰⵏⴰⵡⵜ ⵜⴰⴷⵍⵙⴰⵏⵜ. ⵜⵎⵏⴰⴷ ⵜⵙⴰⵡⵔⵜ ⴰ ⴰⴼⵙⴰⵔ ⵏ ⴽⵔⴰ ⵏ ⵜⵎⵓⴽⵔⵉⵙⵉⵏ ⵉⵣⴷⵉⵏ ⴷ ⵜⵎⴰⵏⴰⵡⵜ ⵜⴰⴷⵍⵙⴰⵏⵜ ⴷ ⴽⵔⴰ ⵡⴰⵔⵔⴰⵎⵏ ⵉⴳⵔⴰⵖⵍⴰⵏ ⴷ ⵓⵎⵢⴰⴷⴰⵙ ⴰⵎⵖⵔⵉⴱⵉ ⵉ ⵓⵙⵏⴰⵔⴰ ⵏⵏⵙ.

ⵙ ⵜⵡⵉⵙⵉ ⵏ :

ⵎⵀⴷⵉ ⵄⵍⵉⵡⴰ, ⵍⵃⵓⵙⴰⵢⵏ ⴰⵢⵜ ⴱⴰⵃⵙⵉⵏ, ⵍⵅⴰⵟⵉⵕ ⴰⴱⵓⵍⵇⴰⵙⵎ, ⵍⵃⵓⵙⴰⵢⵏ ⴰⵎⵓⵣⴰⵢ, ⵄⴱⴷⵙⵍⴰⵎ ⵅⴰⵍⴰⴼⵉ, ⵎⵓⵃⵎⵎⴰⴷ ⵓⴱⵏⵄⵍ.

الأرضية التأطيرية للورش التفاعلي

يعتبر التنوع الثقافي من المواضيع السائدة اليوم والتي تستحوذ على حيز هام من الفضاءات الاعلامية ومن مساحات النقاشات العمومية. فإذا كان التنوع صفة غالبة وطبيعية تسم معظم المجتمعات الانسانية، إلا أن تحوله إلى مشكل سياسي أو إلى موضوع للاعتراف الرسمي وللتدبيرالعملي يختلف من سياق إلى آخر بتباين مسارات تشكل الدول وطبيعة أنظمتها السياسية والاجتماعية.

فالحديث عن التنوع الثقافي مثله مثل كل حديث عن الثقافة يشق طريقه بصعوبة وعلى أرضية مفاهيم وكلمات متحركة، يصعب الارتكان فيه الى تحديد مفاهيمي ثابت وواضح. لذا تميزت سيرورات إدماج هذه المقولة، الى جانب الحقوق الثقافية الذي يرتهن بها تحققه الفعلي، في المنظومة الدولية لحقوق الإنسان وآلياتها المؤسساتية بنوع من التذبذب والتحفظ والانتظارية.

فرغم أن الاعلان العالمي لحقوق الانسان ينص على أن كل فرد له الحق في الأمن الاجتماعي المبني على التمتع بكافة حقوقه الاقتصادية والاجتماعية والثقافية، إلا أن مفهوم الحقوق الثقافية، التي تتضمن مبدئيا الحقوق اللغوية، ما فتئ يثير أجوبة متعددة ومتناقضة. فالنقاشات التي تثيرها والمعارضات التي تستهدف استحضار بعض الجوانب التي لم يشملها التوافق العام يطبع هذا الموضوع بتعقده النظري والتطبيقي. غالبا ما تكون الحقوق الثقافية موضوع توافق حين تحيل على الحق في المشاركة في الحياة الثقافية، لكن تمطيط المفهوم ليشمل حقوق ثقافات خاصة أو مهمشة أو الحقوق الثقافية الخاصة ببعض الجماعات غالبا ما تقابله معارضة بعض المتمسكين بالإطار الليبرالي الكلاسيكي للديمقراطية المحصورة على تصورها لمبدأ كونية حقوق الانسان المركزة على عنصر الفرد وعلى حياد الثقافات الرسمية المهيمنة.

ولا يختلف اثنان في أن هذه الوضعية الهامشية لهذه النوعية من الحقوق وما يصاحبها من الآثار السلبية لبعض المفاهيم المكرسة حول طبيعة الثقافات الرسمية يوازيها على المستوى الواقعي نمو مطالب متعددة تدعو إلى إعادة النظر في هذه الوضعية وضرورة مراعاة التكوين التعددي للمجتمعات والبعد الأساسي للثقافة كيفما كان وضعها الاعتباري في سلم الاعتراف السياسي في الولوج إلى الحقوق.

فالمسار التاريخي لتشكل أغلب الدول الوطنية أفرز وضعية تعايش مجتمعات متعددة الثقافات واللغات. يكفي أن ننظر إلى الخريطة السياسية العالمية لكي نلمس هذه الوضعية البديهية، فعدد الدول المعترف بها في المنتظم الدولي لا يطابق عدد المجموعات الثقافية، أو الإثنية أو اللغوية التي تتقاسم مجالاتها الترابية. ومن النادر جدا أن نصادف دولة متجانسة لغويا وثقافيا. فبالإضافة إلى تعايش مجموعات مختلفة الأصول والثقافات داخل حدود دولة قطرية، ساعد المنحى التجانسي الذي وسم بعض سياسات البناء الوطني على إنتاج وضعيات متوترة تستدعي بلورة إجابات واضحة وسريعة لتدبير التنوع الثقافي. إن غياب إستراتيجية لمقاربة واقعية وموضوعية للمشاكل الناجمة عن هذه الوضعية عن طريق وضع سياسات ثقافية ولغوية واضحة تساهم على الحفاظ وصيانة مختلف تعبيراتها يشكل في بعض الأحيان مصدرا رئيسيا للنزاعات الاجتماعية ويخلق حركات مطلبية تبني احتجاجاتها على أساس الحقوق الثقافية، المشاركة أو التمثيلية السياسية للأقليات الوطنية أو الأجنبية، المطالبة الجهوية أو الاستقلال الذاتي...

ولمواجهة مثل هذه القضايا، وضعت بعض الأجوبة تختلف أشكالها ونجاعتها حسب السياقات والتاريخ السياسي للبناء الوطني، وتتمظهر في سياسات الاقصاء الممنهج والاستيعاب القسري للمجموعات الثقافية واللغوية في المنظومة الرمزية الرسمية أو في صيغ مختلفة من الاعتراف حسب نوعية المطالب وطبيعة الكيان السياسي للدولة المعنية. إلى جانب الأجوبة الوطنية والخاصة، وجدت مؤخرا مثل هذه الأسئلة بعض الصدى في المحافل الدولية واكتسبت بعض الشرعية الرمزية لأهميتها الإستراتيجية في مجالات استتباب الأمن وترسيخ أسس التعاون بين الدول وحل النزاعات الإقليمية والحفاظ على البيئة. وتتجلى هذه الاستجابة في وضع بعض الآليات القانونية والميكانيزمات المؤسساتية الاولية لتشكل إطارات نظرية أو إلزامية لمعالجة القضايا المرتبطة بهذا الموضوع واقتراح سبل وصيغ عملية لتدبير عقلاني ومناسب للتنوع الثقافي كصياغة المبادئ المؤطرة للتنوع وسن بعض الحقوق والإجراءات.

ومن فهم أولي لهذه الوضعية، يعتزم مركز الدراسات الأنثروبولوجية والسوسيولوجية تنظيم ورش تفاعلي، وذلك يوم ٢٤ ماي ٢٠١٧، الغاية منه تقديم الإطار العام لتجربة الاعتراف بالتنوع الثقافي، ويستهدف عرض بعض الاشكاليات التي يطرحها التنوع الثقافي، وبعض التجارب الدولية والمقاربة المغربية لتدبيره.

بمشاركة:

مهدي عليوة، الحسين أيت باحسين، الخطير أبوالقاسم، الحسن أموزاي، عبدالسلام خلفي ومحمد اوبنعل.